INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन में राग का महत्त्व

प्रो. डॉ. सृष्टि माथुर

संकायाध्यक्ष , संगीत संकाय

भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रस्तावना :

भारतीय संगीत विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध संगीत परम्पराओं में से एक है। इसकी जड़ें भारतीय संस्कृति, दर्शन, अध्यात्म तथा लोकजीवन में गहराई तक समाहित हैं। भारतीय संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह आत्मिक अनुभूति, भावों की अभिव्यक्ति तथा आध्यात्मिक साधना का माध्यम भी है। विशेषतः हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रत्येक प्रस्तुति का मूल आधार राग होता है। राग के बिना शास्त्रीय गायन की कल्पना संभव नहीं है। जिस प्रकार शरीर को प्राणों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन को राग की आवश्यकता होती है। राग ही गायन को स्वरूप, सौन्दर्य, अनुशासन तथा भावात्मक गहराई प्रदान करता है।

'राग' शब्द संस्कृत धातु 'रञ्ज्' से बना है, जिसका अर्थ है–रंजित करना, प्रसन्न करना अथवा मन को भावों से भर देना। संगीतशास्त्र की दृष्टि से राग स्वरों का ऐसा सुव्यवस्थित एवं कलात्मक समूह है, जो अपने विशिष्ट स्वर-विन्यास, चलन तथा भावों के माध्यम से श्रोता के मन में किसी विशेष रस या अनुभूति का संचार करता है। अतः राग केवल स्वरों का क्रम नहीं, बल्कि एक सजीव संगीतात्मक व्यक्तित्व है, जिसकी अपनी पहचान, प्रकृति और अभिव्यक्ति होती है।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सम्पूर्ण परम्परा रागों पर आधारित है। ध्रुपद, धमार, ख़याल, तराना, ठुमरी, टप्पा तथा भजन जैसी विविध गायन शैलियाँ भी किसी-न-किसी राग के आधार पर ही प्रस्तुत की जाती हैं। प्रत्येक राग के अपने निश्चित नियम, स्वर, आरोह-अवरोह, वादी-सम्वादी, पकड़ तथा विशिष्ट चलन होते हैं, जिनका पालन करते हुए कलाकार अपनी कल्पनाशीलता एवं रचनात्मकता का परिचय देता है। यही कारण है कि एक ही राग को विभिन्न कलाकार अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत करते हैं, फिर भी उसकी मूल पहचान बनी रहती है।

राग भारतीय संगीत की वैज्ञानिक एवं सौन्दर्यपरक संरचना का उत्कृष्ट उदाहरण है। प्रत्येक राग में स्वरों का चयन अत्यन्त सोच-समझकर किया गया है। किसी राग में पाँच स्वर, किसी में छह तथा किसी में सात स्वरों का प्रयोग होता है। कहीं कोमल स्वरों की प्रधानता होती है तो कहीं तीव्र मध्यम का विशेष

महत्त्व होता है। इन सभी तत्वों के संतुलित संयोजन से प्रत्येक राग का विशिष्ट स्वरूप निर्मित होता है। यही कारण है कि समान स्वरों वाले दो राग भी अपनी चलन एवं भावात्मक प्रकृति के कारण एक-दूसरे से पूर्णतः भिन्न प्रतीत होते हैं।

भारतीय संगीतशास्त्र में राग का सम्बन्ध केवल स्वरों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका सम्बन्ध समय, प्रकृति और मानवीय भावनाओं से भी जोड़ा गया है। प्रातःकालीन रागों में शान्ति, गंभीरता एवं आध्यात्मिकता का अनुभव होता है, जबकि सायंकालीन रागों में माधुर्य, अनुराग एवं कोमलता की अनुभूति होती है। इसी प्रकार वर्षा ऋतु में गाए जाने वाले मल्हार वर्ग के राग प्रकृति के उल्लास एवं वर्षा की अनुभूति को सजीव कर देते हैं। यह समय-सिद्धान्त भारतीय संगीत की मौलिक विशेषता है, जो विश्व की अन्य संगीत प्रणालियों से इसे अलग पहचान प्रदान करता है।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन में राग का महत्त्व केवल प्रस्तुति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संगीत-शिक्षा का भी आधार है। प्रत्येक विद्यार्थी अपनी संगीत-यात्रा का आरम्भ सरल स्वरों एवं अलंकारों से करता है, परन्तु वास्तविक संगीत-ज्ञान रागों के अध्ययन से ही प्रारम्भ होता है। रागों का अभ्यास विद्यार्थियों में स्वर-शुद्धि, लयबोध, श्रवण-क्षमता, स्मरण-शक्ति तथा संगीतात्मक संवेदनशीलता का विकास करता है। निरन्तर रियाज़ के माध्यम से विद्यार्थी राग के स्वरूप को आत्मसात करता है और धीरे-धीरे उसकी प्रस्तुति में परिपक्वता आने लगती है।

राग का अध्ययन केवल तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह कलाकार के व्यक्तित्व का भी निर्माण करता है। नियमित रियाज़ से धैर्य, अनुशासन, एकाग्रता तथा आत्मसंयम जैसे गुण विकसित होते हैं। यही गुण एक सफल गायक की पहचान बनते हैं। वर्षों की साधना के बाद कलाकार राग के प्रत्येक स्वर, प्रत्येक मींड, प्रत्येक गमक और प्रत्येक आलाप में अपना अनुभव एवं भावनात्मक गहराई जोड़ पाता है। यही साधना उसकी प्रस्तुति को प्रभावशाली एवं हृदयस्पर्शी बनाती है।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सबसे बड़ी विशेषता इसकी मनोधर्मिता (Improvisation) है। कलाकार राग के निश्चित नियमों के भीतर रहते हुए अपनी कल्पनाशीलता का परिचय देता है। आलाप, बोल-आलाप, सरगम, तान तथा बोल-तान के माध्यम से वह राग के विभिन्न आयामों को उद्घाटित करता है। इस प्रक्रिया में कलाकार की विद्वत्ता, अभ्यास, स्वर-साधना तथा रचनात्मक क्षमता का परिचय मिलता है। यदि राग का ज्ञान सुदृढ़ न हो, तो यह सृजनात्मकता सम्भव नहीं हो सकती। इसलिए राग को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की आत्मा कहा गया है।

भारतीय संगीत की गुरु-शिष्य परम्परा में भी राग का विशेष स्थान है। गुरु अपने अनुभव, साधना तथा परम्परा से प्राप्त ज्ञान को केवल पुस्तकीय रूप में नहीं, बल्कि मौखिक एवं व्यावहारिक अभ्यास के माध्यम से शिष्य को प्रदान करता है। राग का वास्तविक स्वरूप सुनने, दोहराने और वर्षों तक अभ्यास करने से ही समझ में आता है। यही कारण है कि आज भी संगीत शिक्षा में प्रत्यक्ष प्रशिक्षण का महत्त्व बना हुआ है।

वर्तमान समय में यद्यपि संगीत के अनेक नए रूप विकसित हो चुके हैं, फिर भी राग की महत्ता में कोई कमी नहीं आई है। शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त उपशास्त्रीय, सुगम संगीत, भजन, फिल्म संगीत तथा फ्यूज़न संगीत में भी रागों का व्यापक प्रयोग किया जा रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि राग केवल परम्परा का विषय नहीं, बल्कि आधुनिक संगीत की भी आधारशिला है। यही कारण है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन में राग का अध्ययन और उसका संरक्षण आज भी उतना ही आवश्यक है जितना प्राचीन काल में था।

राग की संरचना एवं उसके प्रमुख तत्व :

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में राग की पहचान उसके विशिष्ट स्वरूप एवं निश्चित नियमों से होती है। प्रत्येक राग का निर्माण कुछ आवश्यक तत्वों के आधार पर होता है, जिनके अभाव में किसी भी स्वर-समूह को राग नहीं कहा जा सकता। इन तत्वों में आरोह, अवरोह, वादी, संवादी, पकड़, जाति, स्वर-विन्यास तथा चलन प्रमुख हैं। इन सभी का समुचित समन्वय राग को एक स्वतंत्र एवं विशिष्ट पहचान प्रदान करता है। आरोह से आशय स्वरों के क्रमिक ऊपर की ओर बढ़ने से है, जबकि अवरोह स्वरों के नीचे की ओर उतरने का क्रम है। प्रत्येक राग का अपना निश्चित आरोह-अवरोह होता है, जिसके अनुसार स्वरों का प्रयोग किया जाता है। कहीं कोई स्वर आरोह में वर्जित होता है तो कहीं अवरोह में उसका प्रयोग विशेष ढंग से किया जाता है। इसी प्रकार वादी स्वर राग का सर्वाधिक प्रभावशाली स्वर होता है, जबकि संवादी स्वर उसके साथ सामंजस्य स्थापित करने वाला दूसरा प्रमुख स्वर होता है। इन दोनों स्वरों की प्रधानता से राग का सौन्दर्य और अधिक निखरकर सामने आता है।

राग की पकड़ अथवा मुख्य चलन भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। यही वह स्वर-समूह है जिससे राग की पहचान तुरंत हो जाती है। जब कोई कुशल गायक राग का आलाप प्रारम्भ करता है, तो कुछ ही क्षणों में उसकी पकड़ के माध्यम से श्रोता राग को पहचान लेता है। इसी प्रकार प्रत्येक राग का अपना विशिष्ट स्वभाव होता है। कोई राग गंभीर और शांत प्रकृति का होता है, तो कोई चंचल, कोमल अथवा वीर रस का संचार करने वाला होता है।

भावाभिव्यक्ति में राग की भूमिका

भारतीय संगीत का मूल उद्देश्य केवल स्वर-प्रदर्शन नहीं, बल्कि भावों की अभिव्यक्ति है। राग इस अभिव्यक्ति का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। प्रत्येक राग अपने भीतर एक विशिष्ट भावलोक को समाहित किए रहता है। जब कलाकार पूर्ण तन्मयता और साधना के साथ राग प्रस्तुत करता है, तब वह केवल गीत नहीं गाता, बल्कि श्रोताओं के हृदय में भावों का संचार करता है।

भारतीय काव्यशास्त्र में वर्णित नवरस—श्रृंगार, करुण, वीर, रौद्र, हास्य, अद्भुत, भयानक, बीभत्स और शांत—का अनुभव संगीत के माध्यम से भी कराया जा सकता है। अनेक राग विशेष रूप से किसी एक प्रमुख भाव को व्यक्त करने में सक्षम माने गए हैं। उदाहरणस्वरूप राग भैरव में गंभीरता, वैराग्य और आध्यात्मिकता

का भाव मिलता है। राग यमन शांति, माधुर्य और भक्ति का अनुभव कराता है। राग बागेश्री विरह और कोमल श्रृंगार का सुंदर चित्र प्रस्तुत करता है, जबकि राग दरबारी कान्हड़ा गंभीरता और गहन चिंतन का वातावरण निर्मित करता है।

यद्यपि प्रत्येक कलाकार की प्रस्तुति शैली भिन्न होती है, फिर भी राग की मूल भावधारा स्थिर रहती है। यही विशेषता हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को भावप्रधान बनाती है। एक ही राग को सुनकर विभिन्न श्रोताओं के मन में समान प्रकार की अनुभूतियाँ उत्पन्न होना राग की शक्ति का प्रमाण है।

स्वर-साधना (रियाज़) में राग का महत्त्व

एक सफल शास्त्रीय गायक बनने के लिए केवल मधुर स्वर पर्याप्त नहीं होते। उसके लिए नियमित रियाज़ आवश्यक है, और रियाज़ का सबसे महत्वपूर्ण आधार राग ही है। रागों के अभ्यास से स्वर-शुद्धि, लयबोध, श्वास-नियंत्रण, उच्चारण की स्पष्टता तथा स्वर-विस्तार की क्षमता विकसित होती है।

राग के माध्यम से गायक यह सीखता है कि किस स्वर पर कितना ठहराव देना है, कहाँ मींड का प्रयोग करना है, कहाँ गमक उपयुक्त होगी और कहाँ तान का विस्तार करना चाहिए। निरंतर अभ्यास से कलाकार राग की प्रकृति को आत्मसात कर लेता है और उसकी प्रस्तुति सहज, प्रभावशाली तथा सौन्दर्यपूर्ण बन जाती है।

रागों का अभ्यास मानसिक एकाग्रता को भी बढ़ाता है। जब गायक किसी राग का विस्तृत आलाप करता है, तब उसे प्रत्येक स्वर की शुद्धता, लय तथा भाव का निरंतर ध्यान रखना पड़ता है। यह अभ्यास केवल संगीत कौशल ही नहीं बढ़ाता, बल्कि धैर्य, अनुशासन और आत्मसंयम जैसे गुणों का भी विकास करता है।

विभिन्न गायन शैलियों में राग का महत्त्व

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सभी प्रमुख गायन शैलियाँ राग पर आधारित हैं। ध्रुपद में राग की गंभीरता और शुद्धता पर विशेष बल दिया जाता है। इसमें विस्तृत आलाप द्वारा राग का क्रमिक विकास किया जाता है। ख़याल गायन में राग के भीतर कल्पनाशीलता और मनोधर्मिता को अधिक महत्व प्राप्त है। कलाकार आलाप, बोल-आलाप, सरगम तथा तानों के माध्यम से राग के विविध रूपों को प्रस्तुत करता है। ठुमरी में यद्यपि भाव और शब्दों की प्रधानता रहती है, फिर भी उसकी संपूर्ण प्रस्तुति किसी न किसी राग पर आधारित होती है। इसी प्रकार भजन, तराना, टप्पा तथा अन्य उपशास्त्रीय शैलियों में भी राग ही संगीत की आधारशिला बना रहता है। इससे स्पष्ट है कि चाहे प्रस्तुति का स्वरूप गंभीर हो या हल्का, राग का महत्त्व सर्वत्र समान रूप से बना रहता है।

राग और कलाकार की रचनात्मकता

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सबसे विशिष्ट विशेषता यह है कि इसमें कलाकार को रचनात्मक अभिव्यक्ति की पर्याप्त स्वतंत्रता प्राप्त होती है। यह स्वतंत्रता पूर्णतः अनियंत्रित नहीं होती, बल्कि राग के नियमों के

भीतर ही विकसित होती है। कलाकार जब आलाप, तान, बोल-तान अथवा सरगम प्रस्तुत करता है, तब वह अपनी कल्पनाशक्ति का परिचय देता है, किन्तु राग की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता।

यही संतुलन शास्त्रीय संगीत की श्रेष्ठता का आधार है। राग कलाकार को अनुशासन भी देता है और सृजन की असीम संभावनाएँ भी प्रदान करता है। जितना अधिक कलाकार किसी राग का अभ्यास करता है, उतनी ही उसकी प्रस्तुति परिपक्व, प्रभावशाली और मौलिक होती जाती है। इसलिए कहा जाता है कि राग केवल संगीत का व्याकरण नहीं, बल्कि उसकी आत्मा और उसकी सृजनात्मक शक्ति का स्रोत है।

भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक परम्परा में राग का महत्त्व :

भारतीय संस्कृति में संगीत को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं माना गया, बल्कि उसे ईश्वर की उपासना तथा आत्मानुभूति का साधन भी माना गया है। वैदिक काल से ही स्वर और संगीत का प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों तथा आध्यात्मिक साधना में होता आया है। इसी परम्परा के विकास के साथ रागों का स्वरूप भी समृद्ध हुआ। अनेक संतों, भक्त कवियों तथा संगीताचार्यों ने रागों के माध्यम से भक्ति, प्रेम, करुणा तथा मानवता का संदेश दिया। इस प्रकार राग भारतीय सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न अंग बन गया।

मध्यकालीन संत परम्परा में रागों का विशेष महत्त्व रहा। संत कबीर, सूरदास, मीराबाई, गुरु नानक तथा अनेक भक्त कवियों की रचनाएँ विभिन्न रागों में गाई जाती रही हैं। इससे स्पष्ट होता है कि राग केवल संगीत का विषय नहीं, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का भी प्रतीक है।

आधुनिक युग में राग की प्रासंगिकता

वर्तमान समय में संगीत के अनेक नए रूप विकसित हुए हैं, जैसे फिल्म संगीत, सुगम संगीत, पॉप, फ्यूज़न तथा स्वतंत्र संगीत। इन परिवर्तनों के बावजूद राग की उपयोगिता और महत्ता आज भी बनी हुई है। अनेक प्रसिद्ध फिल्मी गीत शास्त्रीय रागों पर आधारित हैं, जिनकी मधुरता और लोकप्रियता का प्रमुख कारण उनका रागात्मक आधार है।

आज संगीत शिक्षण संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा ऑनलाइन माध्यमों के द्वारा रागों का अध्ययन और प्रशिक्षण व्यापक रूप से उपलब्ध है। डिजिटल तकनीक ने संगीत सीखने की प्रक्रिया को अधिक सुलभ बनाया है, किन्तु राग की वास्तविक समझ आज भी नियमित रियाज़, गुरु के मार्गदर्शन तथा निरंतर श्रवण से ही विकसित होती है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और उसके रागों के प्रति रुचि निरंतर बढ़ रही है। अनेक विदेशी विद्यार्थी भारत आकर राग-संगीत का अध्ययन करते हैं। इससे भारतीय संगीत की वैश्विक प्रतिष्ठा और अधिक सुदृढ़ हुई है।

राग और संगीत का संरक्षण

रागों की परम्परा भारत की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है। यदि इनका संरक्षण नहीं किया गया, तो आने वाली पीढ़ियाँ इस महान संगीत परम्परा के अनेक स्वरूपों से वंचित हो सकती हैं। इसलिए आवश्यक है कि

संगीत शिक्षा में रागों के अध्ययन को अधिक महत्व दिया जाए, पारंपरिक गुरु-शिष्य परम्परा का सम्मान किया जाए तथा युवा पीढ़ी को शास्त्रीय संगीत के प्रति प्रेरित किया जाए।

संगीत समारोहों, शोध कार्यों, अभिलेखीकरण (Documentation) तथा आधुनिक तकनीकों के माध्यम से रागों का संरक्षण और प्रचार-प्रसार किया जा सकता है। इससे न केवल भारतीय संगीत की परम्परा सुरक्षित रहेगी, बल्कि उसकी मौलिकता भी बनी रहेगी।

उपसंहार

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन में राग का स्थान सर्वोपरि है। राग ही वह आधार है, जिसके माध्यम से संगीत को स्वरूप, अनुशासन, सौन्दर्य और भावात्मक अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। प्रत्येक राग अपने भीतर विशिष्ट स्वर-विन्यास, भाव, समय तथा कलात्मक व्यक्तित्व को समेटे हुए होता है। यही विशेषताएँ उसे अन्य रागों से अलग पहचान प्रदान करती हैं।

एक कुशल गायक के लिए राग का गहन ज्ञान अनिवार्य है, क्योंकि उसी के आधार पर वह आलाप, तान, बोल-आलाप तथा अन्य संगीतात्मक प्रयोगों के माध्यम से अपनी रचनात्मक क्षमता का प्रदर्शन करता है। नियमित रियाज़ और गुरु के मार्गदर्शन से कलाकार राग के स्वरूप को आत्मसात करता है तथा श्रोताओं तक उसके भावों को प्रभावपूर्ण ढंग से पहुँचाता है।

आज के आधुनिक युग में भी राग की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त उपशास्त्रीय, भक्ति, सुगम तथा फिल्म संगीत में भी रागों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। यह भारतीय संगीत की जीवंतता और उसकी निरंतर विकसित होती परम्परा का प्रमाण है।

अतः यह कहा जा सकता है कि राग हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की केवल आधारशिला ही नहीं, बल्कि उसकी आत्मा, उसकी पहचान और उसकी शाश्वत शक्ति है। जब तक भारतीय संगीत का अस्तित्व रहेगा, तब तक राग की महिमा और उसका महत्त्व भी अक्षुण्ण बना रहेगा।

संदर्भ :

पं. विष्णु नारायण भातखण्डे - हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति।

पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर - संगीत बालप्रकाश।

शारंगदेव - संगीत रत्नाकर।

आचार्य बृहस्पति - भारतीय संगीत का इतिहास।

डॉ. प्रेमलता शर्मा - भारतीय संगीत : एक अध्ययन।

प्रो. अशोक दा. रानाडे - हिन्दुस्तानी संगीत : परम्परा और विकास।

पं ओमकारनाथ ठाकुर - संगीतांजलि।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM